शिक्षा की पाठ्यचर्या [पाठ्यक्रम]
Curriculum of Education

पाठ्यचर्या का अर्थ एवं परिभाषा
Meaning and Definition of Curriculum

नियोजित शिक्षा के उद्देश्य निश्चित होते हैं। इन निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कुछ विषयों का ज्ञान एवं क्रियाओं का प्रशिक्षण आवश्यक होता है। अपने सामान्य अर्थ में इसी को पाठ्यचर्या कहते हैं। इस प्रकार पाठ्यचर्या शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन होती है।

अँग्रेजी में इसके लिए करीक्यूलम (Curriculum) शब्द का प्रयोग होता है। करीक्यूलम शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द 'क्यूरेर' से हुई है। और 'क्यूरेर' का अर्थ है दौड़ना। इस दृष्टि से करीक्यूलम का अर्थ होता है दौड़ का मैदान। जिस प्रकार दौड़ के मैदान में दौड़कर कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुँचता है उसी प्रकार निश्चित पाठ्यचर्या को पूरा करके शिक्षार्थी निश्चित उद्देश्यो की प्राप्ति करता है।

कनिंघम ने पाठ्यचर्या को उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन रूप में ही स्वीकार किया है। उनके शब्दो में —

> पाठ्यचर्या कलाकार (अध्यापक) के हाथों में वह यन्त्र (साधन) है जिससे वह अपनी वस्तु (विद्यार्थी) को अपने कला कक्ष, कक्षा कक्ष (विद्यालय) में अपने आदर्शो (उद्देश्यो) के अनुसार बनाता है।

पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम

सामान्यत: लोग पाठ्यचर्या (Curriculum) और पाठ्यक्रम (Courses of study) में भेद नहीं करते और इन्हें पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग करते हैं परन्तु इनमें पूर्ण और अंश का भेद है।

- पाठ्यचर्या में नियोजित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यालय और विद्यालय से बाहर जो कुछ भी नियोजित रूप से किया जाता है वह सब समाहित होता है। इसमें पाठ्यविषयों से संबंधित क्रियाओं और सहपाठ्यचारी क्रियाओं, सभी का विवरण होता है।
- जबकि पाठ्यक्रम केवल विद्यालय की सीमा में विकसित किये जाने वाले विभिन्न विषयों के ज्ञान तक सीमित होता है। पाठ्यक्रम में केवल पाठ्यविषयों एवं उनसे संबंधित कार्यों का ही विवरण होता है।

NOTE

किसी स्तर की पाठ्यचर्या का वह भाग जिसमें उस स्तर के लिए सैद्धान्तिक विषयों के ज्ञान की सीमा निश्चित की जाती है, पाठ्यक्रम होता है। स्पष्ट है पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम में पूर्ण और अंश का भेद होता है।

पाठ्यचर्या एवं पाठ्यविवरण

सामान्यत: लोग पाठ्यचर्या (Curriculum) और पाठ्यविवरण (Syllabus) में भी भेद नहीं करते और इन्हें पर्यायवाची शब्दों के रूप में प्रयोग करते हैं, परन्तु इन दोनों में भी अन्तर होता है। शिक्षा के किसी स्तर अथवा किसी स्तर की कक्षा विशेष की पाठ्यचर्या में नियोजित शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विद्यालय में और विद्यालय से बाहर जो कुछ भी नियोजित रूप निश्चित पाठ्यचर्या यथा उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक नहीं हो रही है तो हम उसमें परिवर्तन करते हैं। यदि हमारे सामने कोई निश्चित पाठ्यचर्या न हो तो हम यह जान ही नहीं सकते कि हम किन विषयों के ज्ञान और किन क्रियाओं के प्रशिक्षण से अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कर रहे हैं और कौन-सी क्रियाएँ निरर्थक हैं।

पाठ्यचर्या के प्रकार
Types of Curriculum

① विषय केन्द्रित पाठ्यचर्या — जिस पाठ्यचर्या में सीखने वालों की अपेक्षा पाठ्यविषयों को अधिक महत्व दिया जाता है, उसे विषय केन्द्रित (Subject Centred) पाठ्यचर्या कहा जाता है। प्राचीनकाल में बच्चों की रुचि, रूझान और आवश्यकताओं को ध्यान में रखे बिना सभी बच्चों को समान विषयों का ज्ञान कराया जाता था। आज भी किसी सीमा तक हम यही करते हैं। ऐसी पाठ्यचर्या को विषयप्रधान पाठ्यचर्या कहते हैं।

② बाल केन्द्रित पाठ्यचर्या — जिस पाठ्यचर्या का निर्माण या स्तर के बच्चो के मनोविज्ञान, उनकी रुचि, रुझान, योग्यता और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाता है उसे बालकेन्द्रित (Child Centred) पाठ्यचर्या कहते हैं। इस प्रकार की पाठ्यचर्या में समाज की अपेक्षा व्यष्टि को अधिक महत्व दिया जाता है। एक अच्छी पाठ्यचर्या में व्यक्ति और समाज दोनो को समान महत्व देना चाहिए।

③ जीवन केन्द्रित पाठ्यचर्या (Life Centred) — जिस पाठ्यचर्या में वास्तविक जीवन से संबंधित ज्ञान एवं क्रियाओं को मुख्य स्थान दिया जाता है, और जिसे पूरा भी जीवन की वास्तविक क्रियाओं में भाग लेते हुए किया जाता है उसे जीवन केन्द्रित (Life Centred) पाठ्यचर्या कहा जाता है। इस प्रकार की पाठ्यचर्या में प्रायः बच्चों को घोड़ो की क्रियाओं में प्रशिक्षित किया जाता है।

④ क्रियाप्रधान पाठ्यचर्या (Activity Centred) — जिस पाठ्यचर्या को पूरा करने में बच्चो को क्रिया करने और क्रिया द्वारा सीखने के अवसर दिए जाते है, वह पाठ्यचर्या क्रियाप्रधान (Activity Centred) पाठ्यचर्या कहलाती है। इस प्रकार की पाठ्यचर्या में बच्चों की रचनात्मक प्रवृत्ति को विकसित करने के अवसर मिलते हैं। और बच्चे करके सीखते हैं। इस प्रकार सीखा हुआ ज्ञान स्थायी होता है। परन्तु सब कुछ करके

सीखना सम्भव नहीं होता।

(5) मिश्रित पाठ्यचर्या (Fused) - जिस पाठ्यचर्या में अनेक विषयों को मिलाकर एक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है उसे मिश्रित (Fused) पाठ्यचर्या कहते हैं। आजकल हमारे यहाँ कक्षा 10 तक इतिहास भूगोल, नागरिकशास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र को 'सामाजिक विषय' के रूप में पढ़ाया जाता है। इस प्रकार की पाठ्यचर्या को मिश्रित पाठ्यचर्या कहते हैं।

(6) एकीकृत पाठ्यचर्या / समेकित (Integrated) — वह पाठ्यचर्या जिसके समस्त विषयों की पाठ्यसामग्री और क्रियाओं के बीच सहसंबंध होता है। और जिसे एक इकाई के रूप में विकसित किया जा सकता है, उसे एकीकृत या समेकित (Integrated) पाठ्यचर्या कहते हैं। एकीकृत पाठ्यचर्या ज्ञान को पूर्ण इकाई के रूप में प्रस्तुत करती है और उस सबका सम्बन्ध बच्चों के अपने वास्तविक जीवन से जोड़ती है।

(7) आधारभूत पाठ्यचर्या — आज प्रायः सभी देशों में शिक्षा की व्यवस्था करना राज्य का उत्तरदायित्व माना जाता है और प्रायः सभी राज्य, एक निश्चित स्तर तक की शिक्षा आवश्यक समझते हैं और उसके लिए पाठ्यचर्या की एक ऐसी रूपरेखा बनाते हैं जिसके आधार पर देश के किसी भी क्षेत्र के लिए पाठ्यचर्या का निर्माण किया जा सके। ऐसी पाठ्यचर्या को आधारभूत (Core) पाठ्यचर्या कहते हैं। शारीरिक विकास सभी बच्चो का होना चाहिए, उसमें उनकी रुची, रुझान और आवश्यकता का प्रश्न नहीं उठता।